खण्ड—स 2×14=28

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

10. कठोपनिषद् के अनुसार आत्मज्ञान से अमृतत्व की प्राप्ति कैसे होती है। विशद विवेचन कीजिए।

11. सांख्य दर्शन के अनुसार सत्कार्यवाद हेतु दिए गए तर्कों की समीक्षा कीजिए।

12. न्यायदर्शन के अनुसार ईश्वर की सिद्धि का वर्णन कीजिए।

13. कठोपनिषद् प्रोक्त यम नचिकेता संवाद की वर्तमान प्रासंगिकता पर एक विशद लेख लिखिए।

SA–06

December – Examination 2023

B.A. (Part–III) Examination

SANSKRIT

वेद, उपनिषद् तथा भारतीय दर्शन

Paper : SA-06

*Time : **3** Hours]* *[Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ 7×2=14

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) पुत्र ही आत्मा है, यह किस दर्शन में कहा है ?

   (ii) नचिकेता के पिता का क्या नाम है ?

(iii) ऋत्विज किसे कहते हैं ?

(iv) विवर्तवाद किस दर्शन का सिद्धान्त है ?

(v) सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कौन है ?

(vi) योग दर्शन में मोक्ष को क्या कहा गया है ?

(vii) देहात्मवाद से क्या आशय है ?

खण्ड—ब 4×7=28

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 7 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** मन्त्र की सन्दर्भ-अन्वय-अनुवाद सहित व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) द्यावा चिदस्मै पृथ्वी नमेते, शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।
य: सोमपा निचितो वज्रबाहु, यों वज्रहस्त: स जनास इन्द्र:॥

अथवा

(ब) प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमो कुचरो गिरिष्ठा:।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

3. कठोपनिषद् के अनुसार रथ दृष्टान्त का वर्णन कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** की व्याख्या संस्कृतभाषा में कीजिए—

(अ) शतायुष: पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व, स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छासि।

अथवा

(ब) स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति, न तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वा शनायापीपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके॥

5. विष्णु सूक्त के आधार पर विष्णु के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

6. न्याय एवं वैशैषिक दर्शन के अनुसार समवाय सम्बन्ध को संक्षेप में समझाइए।

7. भूमि सूक्त के पर्यावरणीय महत्व को संक्षेप में रेखांकित कीजिए।

8. चार्वाक दर्शन के अनुसार अनुमान प्रमाण के खण्डन पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

9. बौद्ध दर्शन के अनुसार प्रतीत्यसमुत्पाद को स्पष्ट कीजिए।